शक्तिवर्धक औषधीय गुणवाला: शतावरी "*एस्पेरेगस रेसीमोसस* विल्ड."

विशेषतायें एवं लाभ:

- शतावरी के औषधीय उपयोग में मुख्यतया इसकी जड़ें काम में लाई जाती हैं।
- शतावरी की जड़ों से अनेक प्रकार की औषधियां बनाई जा रही हैं जिनमें बलवर्धक टानिक, महिलाओं के लिए टॉनिक, ल्यूकोरिया, अनीमिया, भूख न लगने तथा पाचन सुधार हेतु टॉनिक, मानसिक तनाव से मुक्ति हेतु दवाईयां एवं टॉनिक प्रमुख हैं।

कृषि तकनीक:

मृदा:

- शतावरी की खेत के लिए उत्तम जल निकासी युक्त बालुई दोमट मिट्टी जिसमें ज्यादा पानी न ठहरता हो, अधिक उपयुक्त होती है।

भूमि की तैयारी:

- खेत को मई-जून में (वर्षा से पहले) 2-3 बार अच्छी तरह जोतना चाहिए। अगस्त में वर्षा कम होने के पश्चात् पुनः जुताई करनीं चाहिए।
- गोबर की सूखी खाद (6 टन) प्रति एकड़ की दर से मिलानी चाहिए।

बिजाई एवं संवर्धन:

- बीजों का अंकुरण 40 प्रतिशत तक होता है एवं प्रति एकड़ 5 किलो बीज की आवश्यकता होती है।
- पौध तैयार करने हेतु 1x10 मीटर की क्यारी निर्मित कर 3:1 अनुपात में मिट्टी व गोबर की खाद का मिश्रण भरा जाता है।
- बीजों की बुआई मई में की जाती है एवं बिजाई के तुरंत बाद सिंचाई करना आवश्यक होता है।
- लगभग एक माह में बीजों का अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है।

रोपाई:

- अगस्त माह में 8-10 से.मी. के पौधों को खेत में 60x60 से.मी. के अंतराल पर लगाया जाता है।
- बीजों के अलावा फसल खुदाई के दौरान भूमिगत जड़ों से प्राप्त छोटे-छोटे अंकुरों से भी पौध तैयार की जा सकती है जो 20 दिनों के अंदर खेत में लगाने योग्य हो जाते हैं।

सिंचाई:

- शतावरी में पौधे लगने तक सप्ताह में एक बार एवं जब पौधे बड़े हो जांए तब एक-एक माह के अंतराल में हल्की सिंचाई की जानी चाहिए।

निराई-गुड़ाई:

- पौधों को खरपतवार रहित करने के लिए प्रत्येक माह पौधों के आस-पास निराई-गुड़ाई करते रहना चाहिए।

उपज:

- रोपण के 12 से 18 माह पश्चात् पौधा पीला पड़ने पर जड़ों की खुदाई की जाती है।
- ताजी जड़ों में 90 प्रतिशत जल पाया जाता है।
- जड़ों का ऊपरी छिलका उतार कर हल्की धूप में सुखाया जाता है।

आय:

- 18 माह पश्चात् प्रति एकड़ लगभग 250 कुन्तल गीली जड़ें प्राप्त होती हैं जो सूखने के पश्चात् 25 कुन्तल रह जाती है तथा इसका बाजार भाव लगभग 2000/- रूपये प्रति कुन्तल है।

संकलन:

डॉ. डी.के. मिश्रा

वन संवर्धन प्रभाग

निदेशक

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान

कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005